(फ) अर्कान्नागचटस्तनुर्जननटः खेटायनं स्रस्तनोः।

चन्द्राद्भाग्यप्रयोः कलेक्यमिनहृच्छिष्टं विधोर्यद्गृहम् ।।

तद्रराशौ तु विपापशोभनखगे कोटीश्वरं तन्वते।

चेत्पापे तु सहस्रशः खलखगे तुङ्गेऽपि कोटीश्वरम् ।।

चतुर्थ वर्ग

8. अधोलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए - 20

(य) नीचांशगास्तुङ्गगृहोपयाता

जातस्य नीचं फलमाशु दद्युः।

नीचङ्गता स्तुङ्गनवांशकस्थाः

सौम्यं फलं व्योमधराः प्रकुर्युः।।

(र) शशाङ्कसौम्यौ दशमोपयातौ

पापेक्षितौ पापसमन्वितौ च।

नीचांशगौ सौम्यदशाविहीनौ

जातस्तु नित्यं खलु पक्षिहन्ता।।

9. जातक पारिजात के अनुसार रेका योगों के लक्षण तथा फल पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

A **(Printed Pages 4)**

Roll No. _____

AS-2227

एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

ज्योतिर्विज्ञान

द्वितीय प्रश्न-पत्रम्

(होराफलित ज्योतिष)

समयः तीन घण्टे **पूर्णाङ्कः 100**

निर्देश : केवल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है। प्रत्येक वर्ग से **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए।

1. अधोलिखित लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए :4×5=20

(क) दिग्वली ग्रह से राजयोग स्पष्ट कीजिए।

(ख) शुक्र की विंशोत्तरी दशा में शनि के अन्तर के वर्ष, मास तथा दिन स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'उत्तरकालामृत' के रचयिता का परिचय दीजिए।

(घ) प्रेष्य योग का लक्षण तथा फल लिखिए।

(ङ) सर्पभय को स्पष्ट करने वाले ग्रहयोगों का वर्णन कीजिए।

(प्रथम वर्ग)

2. अधोलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए : 20

(अ) नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहःस्यात्
तद्राशिनाथोऽपि तद्रच्चनाथः।
स लग्नचन्द्राद् यदि केन्द्रवर्त्ती
राजाभवेद् आर्मिक चक्रवर्त्ती।।

(ब) ग्रहेण युक्ते निधने तद्रक्त-
रोगैर्मृतिर्वाऽथ तदीक्षकस्य।
ग्रहैर्विमुक्ते निधनेऽथतस्य
राशेः स्वभावोदितदोषजाता।।

3. फलदीपिका के अनुसार राजयोगों पर एक विशद लेख लिखिए। 20

(द्वितीय वर्ग)

4. फलदीपिका के अनुसार विंशोत्तरी दशा के आनयन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 20

5. अधोलिखित श्लोकों का आशय स्पष्ट कीजिए- 20

(त) विधुन्तुदे शुभान्विते प्रशस्तभावसंप्रतें
दशाशुभप्रदा तदा महीपतुल्य भूतिदा।
अभीष्ट कार्य सिद्धयो गृहे सुखास्थितिर्भवेत्
अचञ्चलार्थसञ्चया क्षितौप्रसिद्धकीर्त्तयः।।

(थ) द्वावर्थकामाविह मारकाख्यौ
तदीश्वरस्तत्र गतो बलाढ्यः।
हन्ति स्वपाके निधनेश्वरो वा
व्ययेश्वरो वाप्यतिदुर्बलश्चेत् ।।

(तृतीय वर्ग)

6. उत्तरकालामृत के अनुसार ग्रहयोगों से आप्रर्दाय पर प्रकाश डालिए। 20

7. अधोलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए - 20

(प) रन्ध्रेशो व्ययषष्ठगो रिप्रपतौ रन्ध्रेव्यये वा स्थिते।
रिष्फेशोऽपि तथैव रन्ध्ररिप्रभे यस्याऽस्ति तस्मिन् वदेत् ।।
अन्योऽन्यर्क्षगता निरीक्षण युताश्चान्यैम्प्रक्तेक्षिता।
जातोऽसौ नृपतिः प्रशस्त विभवो राजाधिराजेश्वरः।।